आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार-पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक :-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2560 • उदयपुर, मंगलवार 28 दिसम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

लुधियाना (पंजाब) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश-विदेश में समय-समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर 12 दिसम्बर 2021 को नारायण सेवा संस्थान की शाखा लुधियाना द्वारा में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता नारायण सेवा संस्थान उदयपुर द्वारा शिविर में 59 का रजिट्रेशन दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग वितरण 46, कैलीपर्स वितरण 13 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र जी शर्मा (समाजसेवी), अध्यक्षता श्री बलविन्द्र सिंह जी (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि श्री डी.एल.गोयल सा., श्री रोहित जी शर्मा, श्री नवल जी शर्मा (समाजसेवी), शिविर टीम श्री अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री मधुसुदन जी (आश्रम प्रभारी, लुधियाना), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव (सहायक), श्री भवरसिंह जी (टेक्नीशयन), श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर), श्री गोविन्द सिंह जी (टेक्नीशयन) ने भी सेवायें दी।

गंगाखेड (महाराष्ट्र) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें संकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का कम सतत कर रहा है। ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर 12 दिसम्बर 2021 को पूजा मंगल कार्यालय गंगाखेड में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता नारायण सेवा संस्थान शाखा परभणी एवं भोलाराम जी कांकरिया बहुउदेशिय चेरीटेबिल ट्रस्ट गंगाखेड द्वारा शिविर में 216 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 50, केलीपर माप 50, ऑपरेशन चयन 38 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमती ऑचल जी गोयल (जिला कलक्टर महोदया परभणी), अध्यक्षता श्री सुधीर जी गोयल (उपखण्ड अधिकारी परभणी), विशिष्ट अतिथि डॉ. हेमंत जी मुंडे (डॉक्टर), श्री रूचित जी सुराणा (समाजसेविका), श्रीमति वसुंधरा जी बोरगावकर (पुलिस इस्पेक्टर महोदया), श्री गोविंद जी येरमें (तहसीलदार गंगाखेड),श्री ब्रिजगोपाल जी तोषनीवाल (महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी समाज संगठन), शिविर संयोजिका श्रीमति मंजू जी दर्डा (नारायण सेवा संस्थान शाखा परभणी, डॉ. माहेश्वरी जी (जाँच चयन), श्री नाथुसिंह जी, श्री लोकेन्द्र जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री हरिप्रसाद जी लड्डा (शिविर प्रभारी), श्री भरत जी भट्ट (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय

रविवार 9 जनवरी 2022 प्रातः 11.00 बजे से

सुजाबाद भवन, नई सड़क, ग्वालियर (म.प्र.) 7412060406

जैन मंदिर, जैनधर्मशाला, 56/62 चाह चन्द, जीरो रोड, अजंता सिनेमा के पास, प्रयाग राज, यूपी 9351230393

रविवार 8 जनवरी 2022 प्रातः 5.00 बजे से

मेघराज भवन, नियर संतोषी माता मंदिर, इसामिया बाजार, कोठी, हैदराबाद, 9573938038

इस सम्मान समारोह में सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन एवं कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
रविवार 9 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान

मुम्बई माता बाल संयोजन संस्था, महात्मा गांधी, विद्यालय के सामने, वाडा रोड, राजगुरु नगर, पूणे, महाराष्ट्र

समर्पण, अशोक विहार कॉलोनी, फेज-1, पहाड़िया, वाराणसी, उत्तरप्रदेश

पारस मंगल कार्यालय, पारस नगर, शेंदूर्णी जलगांव, महाराष्ट्र

साय साक्षी संघ, एल.आई.जी. 9/3, प्रथम तल स्टेप फेस, 4, के.पी.एच.बी. कॉलोनी, लेदा कामलेका के पास, कूकटपल्ली, तेलंगाना, आन्ध्रप्रदेश

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

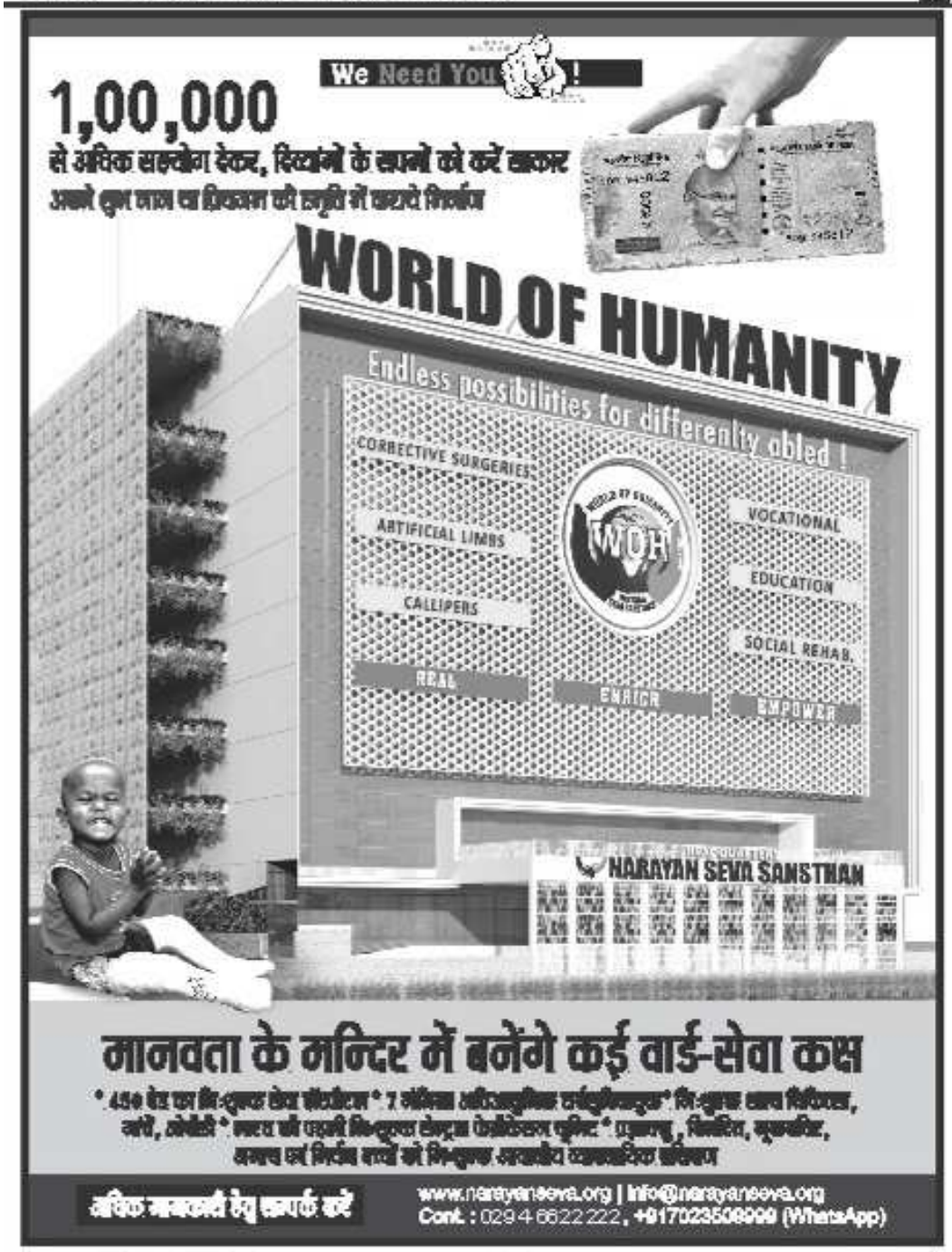

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

साठ रुपये लेके शर्माजी आये हनुमानजी के बोलमा बोली थी। वो ही हनुमानजी जिन्होंने कहा था।

राम काजु कीन्हें बिनु,
मोहि कहाँ बिश्राम।।

उन्होंने कहा था– हनुमानजी के लिये मैंने साठ रुपये का प्रसाद सवाकिलो पचास रुपये में एक किलो आ जाता था। बोलमा बोली थी रात को हनुमानजी ने सपने में दर्शन दिये थे–तुम नारायण सेवा में साठ रुपये देकर आ जाओ। भूखे को रोटी मिलेगी। गरीब को कपड़ा मिलेगा। बीमार को दवाई मिलेगी।

इससे बढ़िया काम क्या हो सकता है? ये वर्ल्ड ऑफ ह्युमिनैटि क्या है? ये मानवता का संसार क्या है? देअर इज आनली वन गॉड। ही इज आनली प्रजेन्ट। ईश्वर केवल एक है वो सर्वव्यापक है। देअर इज आनली वन रीलिजन। रीलिजन ऑफ लव। ये प्यार का धर्म पहचान लो।

जाति, धर्म के शुद्र अहम् पर
लड़ना केवल पशुता है।
जहाँ नहीं माधुर्य भाव है,
वहाँ कहाँ मानवता है।।

इस मानवता के संसार में, इस कथा के माध्यम से मैं आपको ले के चलना चाहता हूँ। आपका बेटा विदेश चला गया। एक ही बेटा विदेश में जाके बस गया।

माई चिंता मत करो। केवल एक टेलीफोन करना। और उससे कहना– मेरा सन्देश कैलाशजी तक पहुँचा दिया जाय। आपके दाल–रोटी की व्यवस्था हो जायेगी।

सम्पादकीय

सामाजिक सेवा मनुष्य का कर्तव्य है। सही में कहे तो यह ऋणमुक्ति का एक उपाय है। व्यक्ति जब जन्म लेता है तो वह माता–पिता से पालित होता है किन्तु उसके सीखने का क्रम समाज से ही विकसित होता है। यह ठीक है कि पहली गुरु माँ होती है पर समाज भी व्यक्ति के लिये प्रारंभिक पाठशाला ही है। समाज के सहयोग व सदाशयता से ही वह कई बातें, आदतें, व्यवहार सीखता है। उसका वातावरण, पर्यावरण उसे कई बातें सीखाता है। यह ज्ञान हरेक व्यक्ति पर समाज का ऋण है। इस ऋण से मुक्ति के लिए जब भी अवसर मिले तो व्यक्ति को प्रयास करना ही चाहिये।

ऋण से मुक्त हुए बिना जीवन से भी मुक्ति संभव नहीं है। ऐसी दशा में समाज का ऋण भी व्यक्ति को उतारना ही चाहिये। सामाजिक ऋण से उऋण होने के लिये उसे अपने स्वभाव व रूचि के अनुसार सामाजिक सेवा का क्षेत्र चुनना चाहिये। वह शिक्षा, चिकित्सा, प्रेरणा अर्थ या कुछ भी हो सकता है।

कुछ काव्यमय

धीरज से उपजा संतोष
मानव को संस्कारी बनाता है।
संतोष फलित होकर हर्षक को
सदाचारी बनाता है।
यह वह बीज है जो
मीठे फल देता है।
सारी व्यग्रताएं, सारी ऐषणाएं
जड़मूल से हर लेता है।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

पारिवारिक प्रेम

माता भरत के मन की थाह नहीं ले पायी। कभी–कभी बहुत प्रेम होता है ना। अरे अणारी मन री थाह लेणो मुश्किल है। ये तो भरतजी जैसा भाई है। ये तो लक्ष्मणजी जैसा भ्राता है। ये हनुमानजी जैसा दास है। हाँ, हनुमान जी महाराज तो कथा में पधार ग्या। जहाँ भी सत्संग होता है। जहाँ चित्रकूट होता है। जहाँ भी प्रेम होता है, वहाँ हनुमानजी महाराज आ ही जाते हैं।

घुमा दे रे म्हारा बालाजी,
घम्मड़ घम्मड़ गोटो
घम्मड़ घम्मड़ म्हारा बालाजी...।

हनुमानजी पार ब्रह्म परमात्मा है। एकादश रूद्र के अवतार है। ऐसे हनुमानजी जहाँ प्रगट होते है। जब तुलसीदास जी हुलसी के बेटे, बांदा के रहने वाले। जब सोचते हैं– कल भी भगवान आये थे राम भगवान। मैं पहचान नहीं पाया। हनुमान जी को प्रार्थना की– आप मुझे पहचान बता देना। हनुमानजी वृक्ष के ऊपर। सुन्दरकाण्ड में प्रसंग आता है।

तरू पल्लव महुँ रहा लुकाई।
करइ बिचार करौं का भाई।।

ऐसे ही यहाँ भी तरू के पल्लव के बीच में बिराज गये। जब भगवान श्रीराम लक्ष्मण पधारे तो हनुमानजी की वाणी मुखर हो गयी।

चित्रकूट के घाट पर,
भई सन्तन की भीर।
तुलसीदास चंदन घिसे,
तिलक करे रघुवीर।।

ऐसे चित्रकूट धाम में कामतनाथ पर्वत पर राम भगवान के चरणों में गिर पडे हैं– त्राही माम्, त्राही माम्, त्राही माम्, भईया बड़ी गलती हुई, बड़ा पापी। मुझे कुमाता कैकेयी ने जन्म दिया। मेरी वजह से आपको कष्ट उठाना पड़ा। आपको अयोध्या से पैदल चलकर यहाँ पधारना पड़ा। ये मेरी सीतामाता जानकीजी वैदेही की पुत्री को भी आना हुआ। मेरे भ्राता लक्ष्मण ने कितना कष्ट पाया? भैया मुझे क्षमा कर दो। राम भगवान ने गले से लगा लिया। बहुत सरलता से बोल उठते है। बार–बार कहिये रामजी से भरतजी मिले

खिल गये लाख–करोड़। लाखों–रहे हैं। सीताजी की आँखों के आँसू नहीं रूकते। कौशल्या माता रोती है। सुमित्रा माता फिर कैकेयी, कैकेयी पछताती है। जब गलत काम करेगी, उसको पछताना पड़ेगा। जो गलत काम करेगा।

बिना विचारे जो करे,
सो पाछे पछताय।
काम बिगाड़े आपणो,
जग में होय हंसाय।।

जब गुरूदेवजी बोले– कि इनके प्रेम के थाह को कोई भी समझ नहीं पाता। अरे! जन्म देने वाली जननी माँ भी नहीं समझ पायी। कैकेयी पछताती हुई आयी थी रोती हुई आयी थी।

लखी सी असहीत, सरल दो भाई,
कुटिल रानी, पछताती आई।

और पछतावे में बोल उठी– ये सच है तो फिर लौट चलो घर भैया, अपराधिन मैं हूँ तात तुम्हारी मैया। मैं अपराधिनी हूँ, पापीनी हूँ, मैं दुष्टा हूँ। लोग कहते है– मंथरा के कहने में कैकयी आ गयी।

क्या कर सकती थी
मरी मन्थरा दासी।

दूसरों पर दोषारोपण मत कीजिये। आप बहक गये, आप कान के कच्चे हो गये। आपका परिवार टूट गया। आपका परिवार कमजोर पड़ गया। भाइ–भाइयों में प्रेम की कमी हो गयी।

पिता की आँखों के आँसू थमते नहीं। माँ बिलखती है, और दोनों भाई लड़ रहे हैं। माँ कोने में रो रही है, आँसू बरसा रही है। ये जीवन नरकों का जीवन है।

–कैलाश 'मानव'

काँच और हिरा

काँच और हीरे में क्या फर्क है? जबकि दोनों ही दिखने में बिल्कुल एक समान हैं। ठीक उसी तरह क्रोधी व्यक्ति और संयमित व्यक्ति में क्या अन्तर है? जबकि शारीरिक बनावट तो ईश्वर ने सभी की समान ही रखी है। हीरों का एक बहुत बड़ा व्यापारी राजा के पास आया। उस समय राजा अपने मंत्रियों के साथ बगीचे में टहल रहे थे।

व्यापारी ने राजा के सामने टेबल पर दो काँच के टुकड़े रखे। व्यापारी ने राजा से कहा–राजन्, इन दो काँच के टुकड़ों में से एक बहुत मूल्यवान हीरा है तथा दूसरा केवल काँच का टुकड़ा ही है। आपको यह बताना है कि कौन–सा हीरा है और कौन–सा काँच का टुकड़ा है? परंतु शर्त यह है कि यदि आपने उस हीरे को पहचान लिया तो वह बहुमॅल्य हीरा आपका हो जाएगा और अगर आप वो हीरा नहीं पहचान पाए, तो उस हीरे के मूल्य के बराबर का धन आप मुझे देंगे। राजा ने

व्यापारी की शर्त स्वीकार कर ली।

राजा ने दोनों को जाँचने–परखने का बहुत प्रयास किया, परंतु दोनों में लेशमात्र भी अंतर नहीं होने पर राजा हीरे व काँच की पहचान नहीं कर पाया। तभी अचानक दूर से एक अंधे व्यक्ति की आवाज आई कि राजन् मुझे एक मौका दिया जाए तो मैं कोशिश करके देखता हूँ। राजा ने विचार किया कि इस व्यक्ति को एक मौका देने में कोई हर्ज नहीं है।

राजा ने उस प्रज्ञा चक्षु व्यक्ति को हीरे व काँच की पहचान करने के लिए अनुमति दे दी। वह व्यक्ति टेबल के पास पहुँचा और दोनों को हाथ लगाकर कुछ ही क्षण में बता दिया कि यह हीरा है और यह काँच है। वह व्यापारी उस अंधे व्यक्ति के सही उत्तर पर दंग रह गया। उसने कहा–आपने बिल्कुल सही पहचान की है।

मैं अपनी हार स्वीकार करता हूँ, परंतु आपने हीरे और काँच की सटीक पहचान इतने कम समय में कैसे कर ली? अंधे व्यक्ति ने उत्तर दिया–जो गरमी में गर्म हो जाए, वह काँच और जो गर्मी में भी ठण्डा रहे, वह हीरा होता है।

सूर्य की रोशनी से काँच गर्म हो गया था, जबकि हीरा उस गर्मी में ठण्डा था। कहने का तात्पर्य है कि प्रतिकूल परिस्थितियाँ पैदा हो जाने पर जो क्रोधित हो जाता है, वह काँ के समान है अर्थात टूटकर बिखर सकता है, जबकि प्रतिकूल परिस्थितियाँ पैदा होने पर भी जो क्रोधित न होकर संयमित बना रहता है, वह हीरे के समान बहुमूल्य है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश को पुस्तकें पढ़ने का शौक था ही। इसी सिलसिले में एक पुस्तक "दी सिक्रेट" जिसका हिन्दी संस्करण 'रहस्य है,' पढ़ी थी। इसी से ब्रह्माण्ड के बारे में पढ़कर वह इस और आकर्षित हो गया था। पुस्तक में ब्रह्माण्ड की दो शर्तें बताई गयी थी। कृतज्ञता और प्रसन्नता। जब भी वह रात को सोता इसी पर मनन करता।

कृतज्ञता तो उसकी समझ में आ गई थी मगर प्रसन्नता समझ में नहीं आई। हर कोई, हर समय प्रसन्न कैसे रह सकता है, यह अत्यन्त दुरूह था। उतार–चढ़ाव, धूप–छाँव, उलट–फेर ये तो दैनन्दिन जीवन के अंग हैं मगर इन सबका एहसास करते हुए भी कैसे प्रसन्न रहा जा सकता है यही एक तरह का शक्ति परीक्षण है।

पुस्तक के अनुसार, ब्रह्माण्ड कहता है कि कोई बच्चा रोता है तो उसे गुब्बारा फूला कर दे देते हैं तो वह प्रसन्न हो जाता है, अपना दुःख भूल जाता है। इसी तरह ब्रह्माण्ड के लिये तो सभी बच्चे ही हैं। जिस तरह बच्चा किसी चीज से खुश हो जाता है उसी तरह व्यक्ति किसी न किसी चीज से खुश होता ही है।

परिवार वाले यदि इस बात का ध्यान रखें कि उनके स्वजन किस बात, किस दृश्य, किस घटना से खुश हो जाते हैं और उनका मूड बदल जाता है, गुस्सा शांत हो जाता है या दुःख दूर हो जाता है तो वही बात उस वक्त उनके सामने करें तो वे प्रसन्न हो अपना दुःख भूल जायेंगे।

कैलाश इस बात से बहुत प्रभावित हुआ और इसका प्रयोग भी आसपास के लोगों पर करता ही रहता।

जब वह देखता कि किस तरह सामने वाले व्यक्ति का मूड की बदल गया है तो उसका ब्रह्माण्ड के सिद्धान्त में विश्वास और बढ़ जाता। बहुत चिन्तन–मनन के बाद वह इस नतीजे पर पहुंचा कि ब्रह्माण्ड अपना अन्तर्मन ही है, और कुछ नहीं।

अंश - 193

फलों से मजबूत होती है शरीर के रोग प्रतिरोधी क्षमता

शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता (इम्युनिटी) हमें बीमारियों से लड़ने की ताकत देती है। जब यह क्षमता कमजोर हो जाती है तो रोग हमें घेर लेते हैं। उन्ही रोगों में से एक है स्वाइन लू। इससे बचने के लिए जरूरी है कि हम इम्युनिटी बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास करें, आइए जानते हैं इनके बारे में।

ये फल होते हैं उपयोगी–

फलों में सेब, अनानास, नाशपाती, अंगूर, संतरा, अनार, तरबूज और खरबूजा इम्युनिटी (रोग प्रतिरोधी क्षमता) बढ़ाने के लिए फायदेमंद होते हैं क्योंकि इनमें एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन व मिनरल्स की अधिकता होती है। किसी भी प्रकार के संक्रमण से बचाव के लिए इन्हें भली प्रकार से धो कर प्रयोग करना चाहिये। इससे उनकी ऊपरी सतह पर मौजूद बैक्टीरिया नष्ट हो जाते हैं। अगर फल का कोई हिस्सा गल या सड़ गया है तो उसे खाना नहीं चाहिए। कफ, खांसी व लगातार नाक से पानी बहने की वजह से शरीर में पानी की कमी हो जाती है इसलिए पर्याप्त लिक्विड डाइट लेते रहें। लगातार नाक से पानी बहने की वजह से शरीर में पानी की कमी हो जाती है इसलिए पर्याप्त लिक्विड डाइट लेते रहें।

तब न खाएं : अगर डायबिटीज का मरीज स्वाइन लू से पीड़ित हो तो वह तरबूज, खरबूजा, अंगूर, केले और चीकू न लें। लेकिन सेब, पपीता और अनार सीमित मात्रा में ले सकते हैं।

प्रयोग : फलों का प्रयोग जूस, रायता, सलाद और कच्चे तौर पर करना भी स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

अरे! महाराज ये भजन बोलते हो। कैलाश चन्द्र अग्रवाल अपने मन में झाँक कर देखा क्या? ये भजन तेरे मन में बैठ गया? अरे! जब विपश्यना ध्यान कर रहा था हाँ, ये शरीर जलेगा उसके साथ ये किडनी भी जाएगी। ये हृदय भी चला जाएगा। न न न ये तुरन्त चले जाएंगे। ये कपाल कठोर है। ये माथा की हड्डी जरूर कठोर है। महाराज इतनी अग्नि जल रही है, फिर भी यह टूटता नहीं है। कितना कठोर ? कितना कठोर ? हाँ, फिर एक बाँस हाँ, पुत्र पुत्राधिकार बहुजी, पुत्रजी, पोताजी, पोतीजी, दोहिताजी, दोहितीजी, सगा संबंधी साढू साहब अरे! अरे! अरे! सुना सुना क्या हुआ? उनका स्वर्गवास हो गया– कैलाश जी का।

कलम कान पर टंगी रहती है। कल की पेशी पड़ी रहती है। हाथ में घड़ी लगी रहती है, और सेठ साहब रवाना हो जाते हैं। परदेसी रवाना हो गए, और प्यारी काया पड़ी रही। यही होता रहा। पालियाखेड़ा चले गए। जो चले गए भाग्य में था। हाँ, अब चाहकर भी क्या मालूम नहीं जा पावें। हाँ दूर–दूर से लोग आए। मत पूछिए क्या जाति है? हरि को भजे सो हरि को होई, जात पात पूछे ना कोई।

मेवाड़ की महारानी मीरां बाई रैदास भगत वाराणसी वाले रविदास जी, हाँ जूतियाँ सिलने का काम करते थे। कितना बड़ा आश्रम बन गया। रविदास आश्रम रविदास मंदिर जहाँ प्रधानमंत्री भी गए थे। अभी कुछ समय पहले नरेन्द्र मोदी साहब। हाँ, उनकी शिष्या बन गई– महारानी मीरां बाई। हाँ, जिन मीरां बाई ने गाया था गिरधारी म्हाने चाकर राखो जी। अब चाकर नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे? हाँ, ठाकुर तो एक ही लाला उसको ब्रह्माण्ड कहो, उसको प्रकृति कहो, उसको ऋतु कहो, लो जैसा कर्म करेंगे वैसा फल देगा भगवान। पालियाखेड़ा में गए। विष्णु जी शर्मा हितेषी साहब, मेहता साहब पालियाखेड़ा ठाकुर की कृपा हड्डियों का ढाँचा देखकर काँप गए हम तो। मांस जैसे निकल गया। हड्डियों का ढाँचा पसलियाँ दिख रही है। अंगुलियों की हड्डियाँ दिख रही हैं– क्या हैं? नरेगा में भी नहीं जा सकते।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 320 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक. कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से 4, उदयपुर (राज) स्वामित्व. नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल. ई, डी-71 बापा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर मुद्रक- न्यूटुंक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर -3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियों का गुडा, उदयपुर सम्पादक: लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल: mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023